सफलता के रहस्य को जानें - दादी प्रकाशमणि

अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन में देशभर से आये महामण्डलेश्वर व संतजनों के साथ वार्तालाप करते हुए दादी प्रकाशमणि। साथ हैं दादी हृदयमोहिनी।

क्या मेरा फेथ है?

अनुभवों के आधार पर हर बात में सफलता समाई हुई है। पहली बात हम खुद से पूछें कि मेरा बाबा पर और सारी नॉलेज पर पूरा-पूरा पक्का निश्चय है? निश्चय बुद्धि विजयन्ति। अगर परमात्मा में पूरा निश्चय है तो वे हमें जो नई-नई नॉलेज दे रहा है, जिसे कभी कहीं सुना नहीं, जो हम सबके लिए बिल्कुल नई है। तो खुद से पूछना है कि हर प्वाइंट में हर प्रकार से परमपिता और नॉलेज में मेरा फेथ है? या उसी निश्चय में कभी-कभी कोई-न-कोई संकल्प, जिसको संशय कहो, वह उठता है? या मुझे शिव पिता पर 100 परसेन्ट निश्चय है और उसी निश्चय से हर कदम में विजयी हैं क्योंकि सबसे पहले निश्चय है कि परमात्मा सत्य है, सत्य परमात्मा जो सुनाता है वह सब सत्य है। तो **अगर परमपिता में हमारा निश्चय है, तो हर सेकेण्ड, हर कदम में जो श्रीमत है, उसी श्रीमत पर चलते हैं? फल स्वरूप हर कदम के पीछे सफलता का अनुभव होता है? श्रीमत पर ऐसा अनुभव रहता कि हर कदम आगे बढ़ते सहज ही विजयी बनते जा रहे हैं। तो यह भी हुई सफलता।** तो सफलता का आधार, हमारा हर कदम श्रीमत पर हो। श्रीमत अनुभव कराती है कि हमारे हर कदम के पीछे पदम समाया हुआ है। इसलिए भगवान के इशारे अनुसार कदम-कदम पर सौभाग्यशाली अथवा पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम श्रीमत में अपनी हद की मनमत न मिलावें, सदा श्रीमत को बुद्धि में धारण करें तो सामने परमात्मा रहेगा।

सफलता का आधार है- त्याग

त्याग जिसकी बुद्धि में रहता है, उसे त्याग के रिटर्न में सौ गुणा भाग्य मिलता है। **त्याग के लिए परमात्मा का पहला-पहला डायरेक्शन है कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को त्याग अर्थात् भूल मामेकम याद करो। तो त्याग में अभिमान भी आता, सम्बन्ध भी आते, इच्छायें भी आती। तो जहाँ सब इच्छायें त्याग हो जातीं वहाँ सफलता ज़रूर होती है। त्याग माना इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा का अर्थ ही है अज्ञान।** इच्छायें सौ प्रकार की हैं, उन सब इच्छाओं का त्याग चाहिए। यह भी इच्छा है कि मेरे सेंटर की सेवा बहुत अच्छी हो तो हम सबको बतायें वाह मेरा सेंटर... यह भी इच्छा है। अपनी सेवाओं के लिए बहुत इच्छा करते और वही इच्छा रखकर सेवा करते।

सूक्ष्म अहम को पहचानें

आप कहेंगे यह इच्छा थोड़ेही है, यह तो उमंग होता। लेकिन उमंग अलग चीज़ है, इच्छा अलग चीज़ है। यह बहुत सूक्ष्म है, इसलिए मिक्स हो जाता है। इच्छा में अहम् पैदा होता, इच्छा में देह-अभिमान आता, मैं और मेरा आता। तो यह जो बाबा कहते कि यह सेवायें तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बाबा करन-करावनहार कराता, वह भूल जाता है। मैंने आज बहुत अच्छा भाषण किया, सबको बहुत अच्छा लगा, यह भी इच्छा है। यह भी जो सूक्ष्म आता कि हम इनसे भी आगे जाके दिखाएं, इसमें भी आगे जाऊंगी, यह करूंगी, यह करूंगी, यह है गी, गी, गी...देह-अभिमान। जैसे शिव पिता कहते, तुम भाषण करने बैठो तो परमात्मा को याद करो तो वह आपेही बुलवायेगा। परंतु मैं आज यह करूंगी, ऐसा-ऐसा बोलूंगी... यह जो 'मैं' 'मैं' आता, वह है इच्छा। परंतु परमात्मा को याद किया, वो मेरे साथ है, मैं निमित्त हूँ...। निमित्त समझकर चलना, यही सफलता का आधार है।

पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा(परमात्मा) की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता, मैं उस अनुसार सेवा करती? 'मैं-पन' आता तो यह हुई हद की सेवा, परंतु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी।

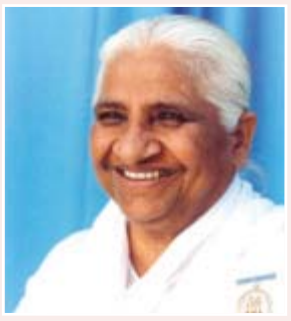

नो इच्छा-तब अच्छा

अगर इच्छा नहीं होगी तो सदैव अनुभव होगा कि शिव पिता की मेरे ऊपर बहुत ब्लैसिंग्स हैं। तो कोई इसमें परमात्मा की ब्लैसिंग समझकर चलते, कोई उनकी ब्लैसिंग को नहीं मानते। परंतु अगर लाईन क्लीयर है तो परमात्मा की एक के बदले सौ गुणा ब्लैसिंग मिलती। शिव पिता को हम मानते हैं, वह हमारा वरदाता है, वरदानों से हमें आगे बढ़ाता है। तो हम वरदानी हैं, ऐसा खुद में निश्चय हो जाये। इच्छा वाले को रहता कि मेरा शो हो, इसने बहुत अच्छा किया, यह किया, वह किया...यह है इच्छा। परंतु कहा जाता है कि तुम निमित्त हो, इसलिए निष्कामी बन सेवा करो। तो बाबा तुम्हें विशेष सफलता देगा। इच्छा वाला कभी ना-उम्मीद हो जायेगा और कभी कोई सफलता मिली तो उम्मीद में आयेगा। तो उसका बैलेंस नहीं रहता। परंतु परमात्मा का वरदान है 'हे उम्मीदों के सितारे!' हे पदमापदम भाग्यशाली, सौभाग्यशाली बच्चे! यह सब हमारे लिए वरदान हैं।

सफलता के लिए त्यागी बनो

सफलता के लिए पहले त्यागी बनो। फिर दूसरा हमारी पढ़ाई है, तपस्वी बनो। तो त्यागी फिर हो तपस्वी। तपस्या ही हमारे इस ज्ञान का आधार है, क्योंकि हम योगी हैं, तपस्वी हैं। हम योगी और तपस्वियों के बीच ज़रा अंश-मात्र भी माया नहीं होनी चाहिए। कहते हैं कि **तपस्वी जब तपस्या करते हैं तो असुर आ करके विघ्न डालते हैं। यहाँ फिर व्यर्थ संकल्प-विकल्प तपस्या में बहुत सामना करते हैं। परंतु हम परमात्मा की याद में ऐसा लवलीन रहें जो व्यर्थ संकल्प बिल्कुल स्टॉप हो जाए।** व्यर्थ संकल्प जीत बनना ही हमारी तपस्या है, इससे हमारी संकल्प शक्ति बहुत-बहुत पावरफुल बनती है, फिर अशरीरी बनना सहज हो जाता है।

सच्चे अर्थ में सेवा

पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा(परमात्मा) की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता, मैं उस अनुसार सेवा करती? 'मैं-पन' आता तो यह हुई हद की सेवा, परंतु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी।

दूसरा- बाबा कहते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। तो चेक करें कि हम हर प्रकार से सूक्ष्म नष्टोमोहा हैं? नष्टोमोहा बनने का आधार है- बाबा को सामने देखो। हमें ऐसा शिव पिता समान बनना है। तो हरेक खुद से पूछे कि हम कहाँ तक शिव पिता समान बने हैं? हमारा पुरुषार्थ ही है उनके समान सम्पन्न बनना। तो कहा जाता जो उनके समान बनते और उन्हें ही सामने रख चलते, उनकी सब इच्छायें स्वतः पूरी हो जाती हैं। उनकी प्रकृति हर तरह से दासी होती। तो **सरेन्डर माना नो इच्छा। न कोई बुद्धि में इच्छा है, न कोई व्यवहार कार्य की इच्छा है। सरेन्डर माना जो बाबा खिलावे, जो बाबा पहनावे, जहाँ बाबा रखे, उसमें ही मेरी सफलता है।**

- शेष पेज 5 पर...

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Aug 2016
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।